eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

भारतीय नारी शिक्षा की सामाजिक बाधाएंः एक समाजशास्त्रीय विवेचन

डॉ0 शालिनी सोनी[1]
समाजशास्त्र विभाग, राजकीय महिला महाविद्यालय, बेहट (सहारनपुर)

Received: 08 May 2019, Accepted: 11 May 2019 ; Published on line: 15 May 2019

Abstract

नारी शिक्षा किसी भी समाज के समग्र विकास का मूल आधार है, किंतु भारतीय समाज सहित विश्व के अनेक भागों में इसके मार्ग में विविध सामाजिक बाधाएँ विद्यमान हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में नारी शिक्षा के समक्ष उपस्थित प्रमुख सामाजिक अवरोधों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में पितृसत्तात्मक व्यवस्था, लैंगिक भेदभाव, आर्थिक विषमता, बाल विवाह, पारंपरिक मान्यताएँ, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ तथा शैक्षिक अवसंरचना की कमी जैसे कारकों को प्रमुख बाधाओं के रूप में रेखांकित किया गया है। साथ ही, यह भी स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार ये अवरोध न केवल महिलाओं की शिक्षा को प्रभावित करते हैं, बल्कि उनके सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सशक्तिकरण में भी बाधा उत्पन्न करते हैं। यह शोध गुणात्मक पद्धति पर आधारित है तथा द्वितीयक स्रोतों जैसे पुस्तकों, शोधपत्रों, सरकारी रिपोर्टों एवं विभिन्न सर्वेक्षणों का विश्लेषण करता है। अध्ययन के निष्कर्ष यह संकेत करते हैं कि नारी शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए सामाजिक चेतना, नीतिगत हस्तक्षेप, तथा सामुदायिक सहभागिता अत्यंत आवश्यक है। अंततः, शोध यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि नारी शिक्षा में सुधार के बिना सतत एवं समावेशी विकास की कल्पना अधूरी है।

कुंजी शब्द – नारी शिक्षा, सामाजिक बाधाएँ, पितृसत्ता, लैंगिक भेदभाव, बाल विवाह, सामाजिक असमानता, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा का समाजशास्त्र

Introduction

समाज में नारी की स्थिति में जितना आरोह और अवरोह होता रहा है, संभवतः विश्व के इतिहास में किसी दूसरे समाज में यह स्थिति देखने को नहीं मिलती। स्त्री–पुरूषों में परस्पर सम्यक् मानवीय सम्मान की भावना विकसित होने के लिए शिक्षा के महत्व को नकारा नहीं जा सकता, क्योंकि शिक्षा को किसी भी समाज में सामाजिक व आर्थिक विकास का प्रतीक माना जाता है। सामाजिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक चेतना तथा आर्थिक विकास के लिए उच्च साक्षरता दर और शिक्षा की गुणवत्ता परमावश्यक है लेकिन दोनें की दृष्टि से भारत में स्थिति खराब है। आज देश के 65.85 फीसदी पुरूष और 54.96 फीसदी महिलाएं साक्षर हैं। अर्थात पुरूष और महिला साक्षरता में लगभग 22 फीसदी का अंतर है, जो भारतीय समाज में लिंगीय असंतुलन का जीता–जागता प्रतीक है।

नारी शिक्षा के बाधक सामाजिक कारकों की विवेचना समाजशास्त्रीय दृष्टि से अति आवश्यक है, क्योंकि इसके बिना उन कारणों की पहचान कर उपचारात्मक उपायों की उपस्थापना संभव नहीं है। महिला शिक्षा के विकास के लिए किये गये प्रयत्नों के बावजूद भी सामाजिक बाधाओं को पार कर, उच्च शिक्षा प्राप्त युवतियों की चौथाई संख्या, रोजगार क्षेत्रों में नहीं जा पाती है।[1] फलतः प्रशिक्षण एवं रोजगार के क्षेत्रों में समुचित सामंजस्य स्थापित नहीं हो सका है। यहाँ तक देखा गया है कि शिक्षा विषयों का पुरूष और

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

स्त्री के आधार पर अलिखित विभाजन हो गया है। सामान्यतः लड़कों को विज्ञान, गणित तथा विविध तकनीकी विषय चुनने के लिए घर परिवार से प्रेरित व बाध्य किया जाता है और अन्नपूर्णा, गृहलक्ष्मी बनाने के फेर में गृह विज्ञान, पाककला, सिलाई, बुनाई, पेंटिंग जैसे विषय लड़कियों के पल्ले बांध दिये जाते हैं।[2] फलतः शिक्षा प्राप्ति उपरान्त भी लड़कियाँ, लड़कों से पीछे रह जाती हैं।

गाँवों में (शहरी निम्न वर्ग में भी) घरेलू काम के आधिक्य तथा उनको सम्पन्न करने का उत्तरदायित्व लड़कियों का ही होता है।[3] इन्हों कार्यों को सम्पन्न करते हुए उनकी उम्र बढ़ती है। फ्रेसर तथा अन्य (1986 का मानना है कि माता–पिता अपनी सिर्फ एक जिम्मेदारी मानते हैं और वह है, उनका विवाह। उन्हें इस बात का ख्याल तक नहीं आता कि लड़की के प्रति विवाह के अलावा भी एक उत्तरदायित्व उनका यह भी है कि उन्हें शिक्षित कर दिया जाये। साथ ही, लड़कियों की शिक्षा के मार्ग में गरीबी के अलावा परंपरागत सोच व रीति–रिवाज भी बाधक बनते हैं। आमतौर पर यह धारणा है कि बेटों को पढ़ाना–लिखाना फायदेमंद हो सकता है, क्योंकि वे भविष्य में परिवार के लिए कमायेंगे, परिवार का नाम रौशन करेंगे, और बुढ़ापे का सहारा बनेंगे। लड़कियों का क्या, वे तो शादी के बाद ससुराल चली जायेंगी।[4]

संरक्षकों (माता–पिता आदि) का कम पढ़ा–लिखा होना भी नारी शिक्षा में बाधक है, क्योंकि वे शिक्षा का महत्व नहीं समझते। विशेषकर लड़कियों की शिक्षा के तो वे आमतौर पर खिलाफ होते हैं। यही कारण है कि आजादी के बाद शिक्षा के थोड़े–बहुत प्रसार के बावजूद शिक्षित महिलाओं की संख्या पुरूषों की तुलना में बहुत कम है।[5] अभिभावक अभी भी लड़कियों को चिट्ठी लिखने योग्य साक्षरमात्र बनाना चाहते हैं।

गाँवों में सामान्यतः 12–14 वर्ष की अल्पायु में लड़कियों का विवाह भी शिक्षा प्राप्ति में बाधक है। अभिभावक सोचते हैं कि इस उम्र में बालिकाओं को घर में रहकर घर के प्रबंध की पूरी जानकारी होनी चाहिए, अतः वे स्कूल छुड़वा देते हैं। खान एवं नूर (1982) [6] ने अधिकरत बालिकाओं के स्कूल छोड़ने का कारण घरेलू विवशता पाया है, तथा निर्धनता को अशिक्षा का प्रमुख कारण माना है। उपलब्ध आंकड़ो से भी यह ज्ञात होता है कि लगभग 69.49 प्रतिशत बालिकाएं निर्धनता के कारण स्कूल छोड़ देती हैं। बसु (1965) ने यह स्पष्ट किया है कि पर्दा, बाल–विवाह, प्रशिक्षित अध्यापिकाओं की कमी और माता–पिता के अनचाहेपन से भी महिलायें शिक्षा की दौड़ में पीछे रह गई हैं। आर्थिक विपन्नता और परिवार के सदस्यों द्वारा सहयोग व समर्थन न प्राप्त होना भी इसका एक प्रमुख कारण है।

देश की लगभग दो तिहाई आबादी जिन विद्यालयों पर निर्भर है, उनकी दशा में कोई बुनियादी परिवर्तन अभी तक नहीं आ पाया है। शिक्षक–छात्र असंतुलन अवस्था 1 रू 50 में हौ, देश के 12 प्रतिशत स्कूलों में मात्र एक शिक्षक है जो एक साथ कई कक्षाओं को संभालता है, बुनियादी सुविधाओं यथा खेल–कूद का मैदान, पेयजल व शौचालय सुविधायें, प्रत्येक वर्ग के लिए अलग कमरे आदि का अभाव है। ऐसी परिस्थिति में 35 प्रतिशत से अधिक लड़के व 36 प्रतिशत से अधिक लड़कियाँ कक्षा–4 तक स्कूल छोड़ देती हैं। कक्षा–8 तक तो 50 प्रतिशत लड़के और 57 प्रतिशत लड़कियाँ पढ़ाई बीच में ही छोड़ देती हैं। दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनोमिक्स तथा इंडियन सोशल इंस्टीट्यूट के सर्वेक्षण के अनुसार यदि देश के स्कूलों में पंजीकृत सभी छात्र स्कूल जाने लगे तो स्कूल की सारी व्यवस्थायें ध्वस्त हो सकती हैं।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

लड़कियों के लिए अलग स्कूल की कमी भी शिक्षा प्रक्रिया में बाधक है। लड़कियों के ड्राप आउट कारण का उल्लेख करते हुए सी0ई0आर0टी0 की रिपोर्ट में कहा गया है कि गाँव में 45.00 प्रतिशत खेती का कार्य महिलाएँ करती हैं, अतः उनके बच्चों को देखना और काम का बोझ भौली लड़कियों को ढ़ोना पड़ता है।[6]

घर के सदस्यों का शिक्षा के लिए सहयोगी प्रवृत्ति का न होना भी स्त्रियों की शिक्षा में बाधक बनता है। यादव एवं मालवीय (1990)[8] ने अपने सर्वेक्षण में पाया कि 46.05 प्रतिशत महिलाओं की शिक्षा के संबंध में घर के सदस्यों का योगदान नहीं प्राप्त होता है। नयन तारा (1995)[9] ने ग्रामीण बालिकाओं के स्कूल छोड़ने की प्रवृत्ति को परिवार के अन्य व्यवसाय से संबंध बताय। करीब 77.18 प्रतिशत स्कूल छोड़ने वाले बच्चों के माता–पिता या घर के सदस्यों को पढ़ने की आदत नहीं थी। इससे बच्चों को घर की निर्धनता के कारण या घर के खर्च को संभालने के लिए श्रम के कारण पढ़ाई छोड़नी पड़ी थी। अपने सर्वेक्षण में यादव एवं मालवीय (1990)[10] ने पाया कि सम्मिलित रूप से 1000 रूपये तक मासिक आय वाले अधिकतर परिवारों के सदस्य महिलाओं की शिक्षा में योगदान देते ही नहीं, जबकि 1000 रूपये प्रतिमाह से अधिक आय वाले अधिकांश परिवारों के सदस्य बालिकाओं की शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

अधिकांश महिलाएं स्कूल जाने की असुविधाओं के कारण शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाती हैं। इसके अतिरिक्त एक बड़ा वर्ग उन महिलाओं का है, जिन्होंने निर्धनता, स्वयं की अनिच्छा, उचित परिवेश का अभाव आदि कारणों से स्कूल का दर्शन नहीं किया। जे0 के0 राय (1995)[11] ने अपने अध्ययन में पाया कि जाति, धर्म एवं सामाजिक रीति–रिवाज से ही महिलाएँ शिक्षा एवं पुनर्विवाह से वंचित की गई। सीता रामू और उषा (1985)[12] ने अपने अध्ययन में पारिवारिक असामंजस्य या झगड़े के मुख्य कारण में लड़कियों का अनपढ़ होना पाया। यह एक बहुत बड़ा कारण है, जो कि लड़कियों को शिक्षित करने के विपरीत मनोवृत्ति बनाता है।

परिवार और सामाजिक कारणों के अतिरिक्त एक बड़ा कारण उनके घरों के निकट या उचित दूरी पर स्कूल न होना है। शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्रायोजित सन 1993 के 5वीं अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण के अनुसार अभी करीब 11 लाख गाँवों में से लगभग 2 लाख गाँव या 17 प्रतिशत गाँव ऐसे हैं, जिसमें गाँव के अन्दर या 1 कि0मी0 की दूरी पर कोई स्कूल नहीं है।[13] 24 प्रतिशत गाँव ऐसे हैं, जहाँ 3 कि0मी0 की दूरी पर कोई माध्यमिक स्कूल नहीं है । अतः गाँवों में स्कूल कॉलेजों की अनुपलब्धता भी लड़कियों की उच्च शिक्षा और मनपसंद शिक्षा न मिल पाने के प्रमुख कारणों में से एक है। लड़कियों के चाहते हुए भी विज्ञान की शिक्षा उन्हें नहीं मिल पाती, क्योंकि गाँवों में विज्ञान की शिक्षा की व्यवस्था नहीं है। इससे स्पष्ट है कि देश में ऐसी अनेक लड़कियाँ होंगी, जिन्हें अपनी प्रतिभा के विकास के अवसर नहीं मिलते होंगे। उन्हें मन मारकर वही सब पढ़ना पड़ता है, जो आस–पास उपलब्ध हैं।

असुरक्षा की भावना लड़कियों की शिक्षा बीच में छुड़वा देने का एक कारण है। अभिभावकों को हमेशा यह भय बना रहता है कि लड़कियों को घर से दूर, चाहे यह दूरी काफी कम ही क्यों न हो, भेजा, तो उनके साथ कभी भी कुछ भी घटना हो सकती है और कोई घटना होने पर लड़की सदा–सदा के लिए बदनाम हो जायेगी। परिणामस्वरूप किसी को मुँह दिखाने लायक नहीं रह जायेंगे। आज जिस तरह समाज

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

में शहरों से लेकर कस्बों व गाँवों में अवांछित वारदातें बढ़ रही हैं, लड़कियों के साथ छेड़–छाड़ से लेकर कुत्सित अपराधों की संख्या भी बढ़ती जा रही है उन्हें देखते हुए माता–पिता की इस शंका को आसानी से खारिज नहीं किया जा सकता।[14] जैसा कि सरकारी आंकड़ा है कि देश में हर घंटे में दो महिलाओं के साथ बलात्कार होता है, बलात्कार का शिकार हर पाँच महिलाओं में एक नाबालिग लड़की होती है । इस असंगति के कारण लड़कियों की शिक्षा बीच में ही छुड़वा दी जाती है और कम उम्र में ही उनकी शादी कर देने से उनके ऊपर जिम्मेदारी का बोझ होने से आगे शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाती हैं। फलतः पुरुषों से प्रत्येक क्षेत्र में पीछे रह जाती हैं।

इन सब की पुष्टि लड़कियों द्वारा शिक्षा में आने के बाद ड्रॉप आउट की वृद्धि से कर सकते हैं। अतः कहा जा सकता है कि लड़कियों को शिक्षित करने के मार्ग में सबसे बड़ी समस्या लड़कियों की शिक्षा के प्रति छाई घोर उदासीनता और लापरवाही है। आमतौर पर देखा गया है कि लड़कों की अपेक्षा लड़कियां पढ़ाई अधिक छोड़ती हैं।[15]

अतः निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि निर्धनता, संरक्षकों की उदासीनता, असंगत शिक्षा, अकुशल निर्देशन, खेती व गृहकार्य, पुरुषों की स्त्री शिक्षा के प्रति नकारात्मक सोच इत्यादि महिलाओं की शिक्षा में आने वाली रुकावट के मुख्य कारण हैं।

सन्दर्भ सूची–

1. व्होरा, आशारानी, महिला प्रगति – क्या पाया, क्या खोया ? योजना, मार्च, 1998, अंक 12, पृ0 6

2. स्टेट्समैन समाचार पत्र, 10 अक्टूबर, 1985, नई दिल्ली ।

3. फ्रेसर, ए0जी0, अलान, एम0एम0 तथा मैकमिलन, "वुमेन एजुकेशन इन इंडिया", द रिपोर्ट ऑफ कमीशन ऑफ इन्क्वायरी, मित्तल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1986

4. पंत, प्रदीप, क्या लड़कियाँ सचमुच बीच में ही पढ़ना छोड देती हैं ? "समाज कल्याण" मार्च, 1997, पृ08

5. पूर्वोद्धृत, पृ0 8

6. खान, मुमताज अली और आइसानूर, स्टैटस ऑफ रूरल वुमेन इन इंडिया, 1982, उप्पल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

7. दूरदर्शन रिपोर्ट एन.सी.आर.टी., सच की परछाई कार्यक्रम, प्रसारण दिनांक 21.01.1998

8. मालवीय, रश्मि, शिक्षा से विरत ग्रामीण बालिकाओं की समस्याएं, पी–एच0डी0 समाजशास्त्र शोध–प्रबंध, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, 1990, पृ0 167

9. नयनतारा, एस0, एजुकेशन इन रूरल इनवायरमेंट, आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1985

10. मालवीय, रश्मि, पूर्वोद्धृत, पृ0 167

11. राय, एम0बी0, सोसायटी एंड एजुकेशन (फीमेल) इन इंडिया, फर्स्ट सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, 1955

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

12. सीरा, रामू, ए0एस0 एंड देवी उषा, एजुकेशन इन रूरल एरियाज रू कॉन्सट्रेंट्स एंड प्रास्पेक्स्ट, आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1985 पृ0 43–46

13. कुकरेजा, सुन्दरलाल, पिछले पचास वर्ष की उपलब्धियाँ और भावी संभावनायें, योजना, अगस्त, 1998, अंक–10, पृ0 06

14. पंत, प्रदीप, पूर्वोद्धृत, पृ0 8

15. कुमारी सुशीला, शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की उपेक्षा, समाज कल्याण, मार्च 1997, पृ0 19